प्रारंभिक साक्षरता परियोजना की कार्य विधियों पर दिल्ली नगर निगम के षिक्षकों की प्रतिक्रिया

जुलाई 2007

प्रारंभिक साक्षरता परियोजना

प्रारंभिक साक्षरता परियोजना की कार्य विधियों पर दिल्ली नगर निगम के षिक्षकों की प्रतिक्रिया

सर्व शिक्षा अभियान (SSA) के अंतर्गत दिल्ली सरकार व एस.सी.ई.आर.टी. (SCERT) के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत प्रारंभिक साक्षरता परियोजना ने 16 प्रशिक्षण सत्रों को आयोजित किया। इनमें परियोजना की कार्य विधियों व समझ को शिक्षकों के समक्ष बांटी गई।यह मूल रूप इस प्रकार से हैं:

क. कक्षा 1 में वर्ण समूह के आधार पर पठन व लेखन।

ख. कक्षा 2 व 3 में शब्द–दीवार, पहेली कोना, कविता कोना अथवा बाल साहित्य के उपयोग से कक्षा के भीतर एक लेख समृद्ध परिवेश विकसित करना।

प्रशिक्षण के अंत में प्रत्येक शिक्षक से लिखित प्रतिक्रिया लेने के लिए एक प्रपत्र दिया गया। कुल 529 में से लगभग 93 प्रतिशत शिक्षक इस कार्य प्रणाली को अपने स्कूल में लागू करने के इच्छुक हैं।

शिक्षकों की प्रतिक्रिया के कुछ मुख्य बिन्दु

" बच्चों को पढ़ाने, सिखाने हेतू अक्षर चार्ट, वर्ण समूह, का प्रयोग बहुत प्रभवशाली लगा। विभिन्न गतिविधियों जैसे शब्द–दीवार, पहेली कोना, फायदेमंद लगीं। आपके द्वारा विकसित विधि द्वारा प्रत्येक एम.सी.डी. बच्चा लिखना–पढ़ना सीख सकता है।" – श्वेता जोशी, तिमारपुर–।, सीविल लाईन क्षेत्र)

शिक्षकों का कहना है :–

- ''इनको लागू करने के लिए किसी प्रकार की देरी नहीं करनी चाहिए, खासकर प्रथम व द्वितीय कक्षा में लागू करने से महत्वपूर्ण परिणाम मिलेंगे।'' – (दीपक मिश्र, ईस्ट पटेल नगर)
- ''इस सत्र में वर्ण समूह द्वारा बच्चों को पढ़ाना लिखाना सिखाना; उनसे विभिन्न गतिविधियों द्वारा संरचना करने का प्रयास करवाना; जितने भी तरीके बताये गये सभी बहुत प्रभावी व कारगर हैं, मैं इनसे बहुत अधिक प्रभावित हूँ'।'' – (शादमा परवीन, तुर्कमान रोड संख्या 1, शहरी क्षेत्र)।
- ''इन तरीकों को लागू करने के लिए उच्च अधिकारियों का सहयोग बहुत जरूरी है। इसमें एस.आई व प्रधानाध्यापक शामिल हैं।'' – (शिखा अरोड़ा, खैबरपास, सीविल लाईन क्षेत्र)
- ''इन तरीकों को कक्षा में लागू करने के लिए स्र्वप्रथम विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं अधिकारीगण से अनुमति लेनी होगी, तभी इन तरीकों को प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है।'' – (रश्मि, जे.जे. कॉलोनी, शादीपुर, करोल बाग क्षेत्र)
- ''इन तरीकों की निर्दश पुस्तिका बनाकर शिक्षकों को दी जाए और रिकार्ड करके कंप्यूटर फ्लापी या सी.डी. के माध्यम से सिखाने में प्रयोग किया जाए।'' – (प्रदीप चिक्कारा, शादीपुर–।, करोल बाग क्षेत्र)
- ''बच्चों के पाठ्यक्रम में इन तकनीकों को अवश्य लागू करना चाहिए जिससे बच्चे लाभ ले सकें और उनकी रचनात्मकता का विकास हो।'' – (प्रियदर्शनी, नजफगढ़–1, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''इसके लिए हमें अक्षर चार्ट, वर्ण चार्ट, कविता चार्ट और कहानियाँ जो सत्र में इस्तेमाल की गई या इसी तरह की अन्य शिक्षण सामग्री की आवश्यकता पड़ेगी। '' – (शमशेर सिंह, खज़ान बस्ती, पश्चिम क्षेत्र)
- ''इन तरीकों को लागू करने के लिए प्रत्येक प्राथमिक शिक्षक को प्रशिक्षण प्रदान करना और इस परियोजना द्वारा बनाई गई शिक्षण सामग्री प्रदान करना।'' – (सीमा कुमारी, ककरौला, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''शत प्रतिशत इसे अपनी कक्षा में प्रयोग करेंगे, इनसे स्वर और व्यंजन की स्पष्ट जानकारी सरल रूप से बच्चों को समझ आयेगी।'' – (माया यादव, हरकेश नगर, मध्य क्षेत्र)

शिक्षकों की प्रतिक्रिया का विस्तृत ब्यौरा नीचे दिया गया है

1. प्रषिक्षण का संक्षिप्त विवरण :

क्रम संख्या	क्षेत्र / जोन	दिनाँक	सत्र	विवरण	कुल संख्या
1.	नजफगढ़	08-05-2007	नजफगढ़–सुबह का सत्र	नियमित शिक्षक	50*
2.	नजफगढ़	08-05-2007	नजफगढ़–दोपहर का सत्र	नियमित शिक्षक	50*
3.	पश्चिम	09-05-2007	तिलक नगर	नई भरती	49
4.	पश्चिम	09-05-2007	तिलग नगर	नई भरती	36
5.	नजफगढ़	10-05-2007	नजफगढ़–सुबह का सत्र	नियमित शिक्षक	39
6.	नजफगढ़	10-05-2007	नजफगढ़–दोपहर का सत्र	नियमित शिक्षक	39
7.	मध्य क्षेत्र	12-05-2007	मोती बाग–सुबह का सत्र	नियमित शिक्षक	58
8.	मध्य क्षेत्र	12-05-2007	मोती बाग–दोपहर का सत्र	नियमित शिक्षक	32
9.	करोल बाग	14-05-2007	पूसा रोड–सुबह का सत्र	नियमित शिक्षक	41
10.	करोल बाग	14-05-2007	पूसा रोड–दोपहर का सत्र	नियमित शिक्षक	49
11.	नजफगढ़	15-05-2007	नजफगढ़–सुबह का सत्र	नई भरती	43
12.	नजफगढ़	15-05-2007	नजफगढ़–दोपहर का सत्र	नई भरती	32
13.	सिविल लाईन / उत्तरी	16-05-2007	शक्ति नगर	नई भरती	39
14.	शहरी क्षेत्र	17-05-2007	दरयागंज–सुबह का सत्र	नियमित शिक्षक	35
15.	शहरी क्षेत्र	17-05-2007	दरयागंज–दोपहर का सत्र	नियमित शिक्षक	16
16.	मध्य क्षेत्र	21-05-2007	मोती बाग–दोपहर का सत्र	नियमित शिक्षक	21

नोट – * इन शिक्षकों की लिखित प्रतिक्रिया का ब्यौरा इस रिर्पोट में सम्मिलित नहीं है।

2. शिक्षकों का फीडबैक (सत्र से जुड़ी प्रतिक्रिया) :

प्रारम्भिक साक्षरता परियोजना द्वारा दिये गये प्रशिक्षण सत्र में भागीदार शिक्षकों की प्रतिक्रिया लेने के लिए प्रत्येक शिक्षक को एक प्रश्न पत्र भरने को दिया गया, जिसमें उन्हें चार प्रश्नों का उत्तर देने को कहा गया। वो चार प्रश्न निम्न है :

- इस सत्र में आपको कौन–कौन से तरीके फायदेमंद लगे ?
- इनको लागू करने के लिए आपके क्या सुझाव है ?
- क्या आप इनको अपनी कक्षा में लागू करना चाहोगे ?
- इसके लिए आपको किस तरह के सहयोग की आवश्यकता होगी ?

शिक्षकों की प्रतिक्रिया की एक झलक

• शिक्षकों की कुल संख्या	:	529		
• निश्चित / निसंदेह लागू करना चाहते हैं	:	260	49%	93%
• हाँ	:	237	45%	
• कुछ संदेह या कुछ हद तक	:	29	5%	
• नहीं	:	2	0.3%	

शिक्षकों की जोन वार प्रतिक्रिया

जोन वार प्रतिक्रिया	कुल संख्या	लागू करना चाहते हैं	529 में से
पश्चिमी जोन	85	74	14%
नजफगढ़ जोन	156	149	28%
मध्य जोन	111	107	20%
शहरी जोन	51	48	9%
करोल बाग जोन	90	83	16%
सीविल लाईन/उत्तरी जोन	39	36	7%

इन प्रष्नों पर षिक्षकों की प्रतिक्रिया/फीडबैक का संक्षिप्त विवरण

फीडबैक देने वाले शिक्षकों की कुल संख्या : 529

प्रश्न संख्या 1 : इस सत्र में आपको कौन–कौन से तरीके फायदेमंद लगे ?

सुझाव	कुल संख्या	प्रतिशत	टिप्पणी
क. प्रारंभिक साक्षरता की विधियों से संबन्धित	166	31.3%	• वर्ण समूह व अक्षर चार्ट हिन्दी भाषा का आधार मजबूत करने के प्रभावशाली तरीके हैं। • छोटी–छोटी कविताऐं वर्ण से शब्द बनाने में मददगार होगी। • शब्द ताली से शब्दों की बनावट का कूल ज्ञान मिलेगा। • क्षा 1 व 2 में हिन्दी भाषा शिक्षण के लिये यह अति प्रभावशाली व उपयोगी है। • यह कारगर, रोचक व मनोरंजक तरीके है। • इनसे पढ़ाना व सीखना आसान होगा।
ख. कक्षा में लिखित मोहौल विकसित करने वाली विधियों से संबन्धित प्रतिक्रियाऐं	142	26%	• कक्षा में हिन्दी लेखन व पठन को प्रेरित करने व सुदृढ़ बनाने के लिए निम्न विधियों को उपयोगी व प्रभावशाली पाया गया ▪ शब्द–दीवार ▪ कविता का कोना ▪ पहेली कोना ▪ कहानी लिखना व पढ़ना ▪ पाठ से सम्बन्धित शब्दों का विभाजन व प्रदर्शन ▪ गतिविधि व क्रियाकलाप द्वारा पढ़ाना ▪ शब्द खोज ▪ जादूई चार्ट (अक्षर चार्ट) ▪ अक्षर चार्ट से मात्राओं के उपयोग के लिए नये शब्द बनाना
ग. उपरोक्त दोनों यॉनि प्रारंभिक साक्षरता एवं लिखित मोहौल विकसित करने की विधियों पर सम्मिलित प्रतिक्रियाऐं	216	41%	प्रारंभिक साक्षरता एव लिखित मोहौल विकसित करने की तकनीक दोनों का प्रयोग करने से – • हिन्दी भाषा सुनने लिखने व पढ़ने की क्षमता का विकास हो। • बच्चो की अभीव्यक्ति व सृजनात्मकता का विकास होगा। • बच्चों का अपने परिवेश से जुडाव रहेगा। • शिक्षको व बच्चों में दूरी कम होगी। • बच्चों में हिन्दी का स्थाई ज्ञान होगा। • बच्चों की वर्तनी में सुधार होगा। • इन तरीकों से छात्रों का भाषा दोष को काफी हद तक ठीक किया जा सकता है।

प्रश्न संख्या 1 पर षिक्षकों की प्रतिक्रिया, उन्हीं के शब्दों में कुछ उदाहरण :

- ''इस सत्र में बताए गये सभी तरीके फायदेमंद लगे। मजेदार बात यह है कि केवल इसी सत्र मे यह जान पाऐ कि वास्तविकता में कक्षा कक्ष में किस प्रकार से शिक्षण किया जाए। अन्य सत्रों की तरह इस सत्र में हवा में बाते करने की बजाय धरातल पर रहकर शिक्षण प्रतिक्रिया पर बल दिया।'' – (तरुण कुमार, वैस्ट पटेल नगर, करोल बाग क्षेत्र)
- ''आज के सत्र में हम उन तरीकों से अवगत हुए जिनसे हम अपनी कक्षा में आ रही कठिनाईयों को दूर कर पायेंगे। सबसे अच्छी बात जो मुझे लगी वह थी, गतिविधियों पर आधारित शिक्षण और बच्चों के अन्दर छिपी हुई प्रतिभा को बाहर निकालने के तरीके किस तरह उनमें शुरु से ही सुधार लाया जा सकता है जब 'बेसिक लर्निंग होती है।'' (दीपा खुराना, राजपुरा सब्जी मण्डी, करोल बाग क्षेत्र)
- आपने वास्तव में उन जमीन स्तर की सम्स्याओं को पकड़ा है जिनका सामना हम शिक्षकों को अपनी कक्षा में करना पड़ता है। मनोविज्ञानिक एवं खेलप्रद तरीकों द्वारा शिक्षण बहुत ही प्रभावशाली है।'' – (अमित पॉल, हरीनगर, पश्चिम क्षेत्र)
- बच्चों को पढ़ाने, सिखाने हेतू अक्षर चार्ट, वर्ण समूह, का प्रयोग बहुत प्रभवशाली लगा। विभिन्न गतिविधियों जैसे शब्द–दीवार, पहेली कोना, फायदेमंद लगा। आपके द्वारा विकसित विधि द्वारा प्रत्येक एम.सी.डी. बच्चा लिखना–पढ़ना सीख सकता है।'' – (श्वेता जोशी, तिमारपुर–।, सीविल लाईन क्षेत्र)
- ''सभी तरीके शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए फायदेमंद हैं। वर्ण–समूह, पढ़ने–लिखने को सीखने संबन्धी क्रियाकलाप, पहेली, कविता, कहानी का प्रस्तुतिकरण, ढ़ांचा प्रस्तुत करके स्वयं लिखने के लिये प्रेरित करना, बच्चों की प्रतिक्रिया को कक्षा में 'डिस्पले' कर उन्हें अभिप्रेरित करना, सभी अत्याधिक प्रभावशाली तरीके हैं'' – (दिव्या सिंह, गामड़ी–।।, शाहदरा, उत्तरी क्षेत्र)
- ''इस सत्र में वर्ण समूह द्वारा बच्चों को पढ़ाना लिखाना सिखाना। उनसे विभिन्न गतिविधियों द्वारा संरचना करने का प्रयास करवाना। जितने भी तरीके बताये गये सभी बहुत प्रभावी व कारगर हैं, मैं इनसे बहुत अधिक प्रभावित हूँ'।'' – (शादमा परवीन, तुर्कमान रोड संख्या 1, शहरी क्षेत्र)।
- ''इस सत्र में मुझे छात्रों को वर्ण–समूह से अवगत कराना श्रेष्ठ लगा क्योंकि अक्सर छात्रों को रटन प्रणाली का प्रयोग कर सिखाया जाता है, जिससे धीरे सीखने वाले बच्चे पिछड़ जाते हैं।'' – रजनी, पोचमपुर बाल, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''छात्रों को रूचिकर ढंग से पढ़ाने के लिये काफी लाभदायक विधियाँ एवं सामग्री के बारे में जानकारी प्राप्त हुई और इससे बताये गये तरीके काफ़ी हद तक छात्रों के भाषा दोष को दूर कर सकते हैं।'' – (मनोज कुमार पांचाल, न्यू देवनगर–1, करोल बाग क्षेत्र)।
- ''हिन्दी पठन–पाठन में यह सत्र बहुत लाभदायक है। वर्णमाला, चार्ट, कहानी, शब्द–दीवार, कविता कोना, कहानी कहना, शब्द ताली कक्षा में बहुत उपयोगी है।'' – (वंदना, गौतमपुरी–।।, मध्य क्षेत्र)
- मुझे लगभग सब गतिविधि बहुत अच्छी लगी क्योंकि इनसे षिक्षण एवं छात्रों की भागीदारी को बढ़ावा मिलेगा।'' – (प्रगति वर्मा, राणा प्रताप नगर, सीविल लाईन क्षेत्र)

प्रश्न संख्या 2 : इसको लागू करने के लिए आपके क्या सुझाव हैं ?

सं.	सुझाव	कुल संख्या	प्रतिशत	टिप्पणी
क.	प्र.सा. परियोजना के विधि से संबन्धित सुझााव	337	67%	• इन विधियों से संबन्धित सम्पूर्ण सहायक शिक्षण सामग्री शिक्षकों को उपलब्ध कराई जाए। • कक्षा का वातावरण बोझिल न होकर क्रिया आधारित हो। • इन विधियों की गहराईयों को समझने व व्यापक स्तर र लागू करने कलए शिक्षक निर्देश पुस्तिका, सी.डी. या विडियो उपलब्ध कराई जाए। • अध्यापकों की जागरूकता, सृजनशीलता व संवेदनशीलता पर ध्यान दिया जाए। • बाल केन्द्रित गतिविधियों द्वारा बच्चों की भागीदारी को बढ़ावा दिया जाए। • कक्षा में रूचिकर मोहौल बनाया जाए। • इन्हें तुरन्त लागू किया जाए।
ख.	ढांचागत पहलू से संबन्धित सुझााव	54	10%	• स्कूल का परिवेश छात्र अनुकूल हो। • कक्षा कक्ष बड़ा हो, व छात्र संख्या कक्षा के अनुसार हो। • शिक्षण सामग्री का रख रक्षाव निश्चित किया जाए। • बच्चों की कला व क्षमता को प्रदर्शित करने के लिए, श्यामपट्ट या डिस्पले बोर्ड हो। • वर्ण चार्ट/अक्षर चार्ट अन्य पोस्टर आदि में बड़े अक्षर हों ताकि पीछे बैठे बच्चे देख पाए। • बच्चों को स्लेट का प्रयोग करने दिया जाए। • कक्षा में आवश्यकता से अधिक चार्ट व अनुपयोगी चार्ट न हो। • समय–समय पर चार्ट व प्रदर्शित सामग्री को बदला जाए।
ग.	प्रशासनिक पहलू से संबन्धित सुझाव	110	21%	• शिक्षकों को इन्हें लागू करने की व अपना लक्ष्य तय करने की छूट दी जाए। • शिक्षण प्रक्रिया को अपनी गति से चलने दिया जाए। • शिक्षक को इसके लिए प्रोत्साहित किया जाए। • शिक्षकों को शिक्षा प्रदान करने के तरीके का चयन करने की स्वतंत्रता हो। • प्रभावशाली तरीके से लागू करने के लिए प्रशासन की मदद जरूरी।

प्रश्न संख्या 2 पर शिक्षकों द्वारा दिये गये सुझावों के कुछ उदाहरण उन्हीं के शब्दों में :

- ''इनको लागू करने के लिए किसी प्रकार की देरी नहीं करनी चाहिए, खासकर प्रथम व द्वितीय कक्षा में लागू करने से महत्वपूर्ण परिणाम मिलेंगे।'' – (दीपक मिश्र, ईस्ट पटेल नगर)
- ''सभी एम.सी.डी. स्कूलों में लागू करना चाहिए।'' – (प्रीति वर्मा, कालकाजी, मध्य क्षेत्र)
- ''इनको इसी रूप में लागू करना चाहिए, क्योंकि काफी शोध के बाद इस रूप में आया है। आपका प्रयास सराहनीय है।'' – (सरवत परवीन, तुर्कमान गेट, शहरी क्षेत्र)
- इन्हें दूरदर्शन पर दिखाया जाए, ताकि यह चीजें हमारे देश में जल्दी लागू हो।'' – (ममता यादव, गोविन्दपुरी, मध्य क्षेत्र)
- ''इन तरीकों को लागू करने के लिए प्रत्येक प्राथमिक शिक्षक को प्रशिक्षण प्रदान करना और इस परियोजना द्वारा बनाई गई शिक्षण सामग्री प्रदान करना।'' – (सीमा कुमारी, ककरौला, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''हम चाहेंगे कि यह जो भी संस्था है वह सिर्फ 6 स्कूलों तक सीमित न रहे बल्कि यह और भी दूसरे जोन के स्कूलों के साथ जुड़े और अपना भाषा सिखाने का तरीका सभी अध्यापकों के साथ बांटें।'' – (असमा शादाला, फैज बाजार, शहरी क्षेत्र)
- ''सभी विद्यालयों में शिक्षण सामग्री व चार्ट शिक्षकों को मिलें। पुस्तिका के माध्यम से इसकी जानकारी भी दी जाए।'' – (सत्येन्द्र पाण्डेय, कापसहेड़ा–1, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''सेमिनार में सिखाये गये तरीकों को शिक्षक अपने स्कूल के कक्षा में लागू करें, इसके लिए हो सके तो विद्यालय में कोई निर्देश पुस्तिका या इन तरीकों पर कोई पाठ्यक्रम या फिर सी.डी. इत्यादि उपलब्ध कराई जाए।'' – (अंजू भण्डारी, नसीरपुर, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''वर्ण व अक्षर चार्ट, गीत इत्यादि द्वारा बच्चों को स्वयं की अभिव्यक्ति का अधिक से अधिक अवसर मिलेगा। कक्षा का वातावरण बोझिल न होकर क्रियात्मक आधारित होगा तो बच्चे अधिक सीख पाऐंगे।'' – (सीमा कुमारी, पश्चिम विहार, पश्चिम क्षेत्र)
- ''बच्चों की ज्यादा–से–ज्यादा भागीदारी होनी चाहिए। सभी बच्चे भाग ले रहे हैं या नहीं, इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए।'' – (प्रियंका, दरियागंज, शहरी क्षेत्र)
- ''इन्हें लागू करने के लिए र्स्वप्रथम शिक्षक को शिक्षा प्रदान करने के तरीके व चयन करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।'' – (रश्मि, शादीपुर–1, करोल बाग क्षेत्र)
- ''स्कूलों में पढ़ने के तरीके में बदलाव लाने के लिए हमारी मूल जरूरतों का पूरा होना जरूरी है। स्कूल में पर्याप्त कमरे हों, कक्षा में बच्चों की संख्या 30 से अधिक नहीं हो, शिक्षकों पर अधिक कार्यभार न हो।'' – (रेनू पहूजा, ख्याला न्यू, पश्चिम क्षेत्र)
- ''इन्हें यदि उचित तरीके से समय व परिवेश को ध्यान में रखते हुए लागू किया जाए तो यह जरूर सार्थक होंगे। जैसे छात्रों की जरूरत को ध्यान में रखकर उनको स्तर के अनुसार सिखाना।'' – (रीना, नजफगढ़–1/2, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''इनको लागू करना चाहिए। इससे बच्चे खेल–खेल में भाषा सीख जायेंगे और भाषा रूचिकर बन जायेगी।'' – (कैलाश किशोर, हरकेश नगर–2, मध्य क्षेत्र)
- ''सभी तरीके फायदेमंद हैं क्योंकि सभी बाल केन्द्रित हैं। यह बच्चों कि अभिव्यक्ति को उनके मनोरंजक माध्यमों से सीखने के लिये प्रेरित करते हैं।'' – (देवयानी शर्मा, मॉडल टाउन, सीविल लाईन क्षेत्र)

प्रश्न संख्या 3 : क्या आप इनको अपनी कक्षा में लागू करना चाहेंगे ?				
सं.	**सुझाव**	**कुल संख्या**	**प्रतिशत**	**टिप्पणी**
क	निसंदेह, अवश्य रूप से, बिल्कुल, निश्चित रूप से– यॉनि पक्का इरादा	260	49%	इनमें निसंदेह, निश्चित रूप से लागू करना चाहेंगे क्योकि ? • वर्ण–समूह द्वारा वर्ण पहचान एवं शब्द पहचान पठन व लेखन प्रभावशाली होती है। • यह सिखाने के मनोरंजक व रूचिपूपर्ण तीरके हैं। • बच्चों को उनके परिवेश से जोड़कर पढ़ाना आसान होगा। • कमजोर बच्चों को पढ़ाने का बहुत उपयोगी तरीका है। • बच्चों में हिन्दी भाषा का आधार इनके द्वारा मजबूत होगा। • इनके द्वारा शब्दों की बनावट का ज्ञान मिलता है जो कि अत्यंत उपयोगी है। • इनके द्वारा कक्षा में छात्रों की उपस्थिति में सुधार होगा। • इस तरीके से एक शिक्षक बड़ी मात्रा में बच्चों को एक साथ पढ़ा सकते हैं। • खेल व अन्य गतिविधियों द्वारा बच्चों को सीखने के लिये प्रेरित किया जा सकता है। • कक्षा के परिणाम में निश्चित रूप से सुधार होगा। • बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ेगा। • छात्रों का सृजनात्मकता विकास करने का अवसर मिलेगा। • इनको लागू करने में ज्यादा खर्च भी नहीं आयेगा। • इनके द्वारा शिक्षक व छात्रों की बीच के दूरी कम होगी।
ख	जी हाँ, इन्हें अपनी कक्षा में लागू कराना चाहेंगे।	237	45%	
ग	हाँ, परन्तु कुछ शंकाऐं हैं	29	5%	लागू करना चाहते हैं परन्तु : • जहाँ भवन की दीवारें टूटी हैं या टेन्ट में कक्षा लग रही हैं वहाँ मुश्किल होगी। • विभाग द्वारा स्वीकृति मिले तो। • पाठ्यक्रम में लचीलापन हो और पूरा करने का दबाव न हो। • कक्षा में 100 से अधिक बच्चे हैं तो दिक्कत है। • विभाग आर्थिक सहायता दे तो। • शिक्षकों को लागू करने की स्वतंत्रता हो। • शिक्षकों को इसके लिए समय मिले तो।
घ	नहीं	2	0.3%	नहीं करना चाहते क्योंकि ? • मात्रा का ज्ञान अधूरा और लेखन अशुद्ध होगा। • बच्चे साधारणतः बारहखड़ी से सीखना चाहते हैं।

प्रश्न संख्या 3 के उत्तर षिक्षकों के शब्दों में, कुछ उदाहरण :

- ''हाँ, जरूर लागू करना चाहेंगे अपनी कक्षा में, क्योंकि वर्तमान तरीके से भाषा सिखाने में कुछ हद तक शिक्षक असफल हो रहे हैं व उन्हें कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। अक्षर चार्ट, वर्ण–समूह, शब्द–दीवार इसलिए बहुत फायदेमंद हैं क्योंकि इनकी मदद से बच्चों का हिन्दी का आधार मजबुत बनेगा और बच्चे जल्द व आसानी से भाषा ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।'' – (कुशहा चतुर्वेदी, जहांगीरपुरी, सीविल लाईन)
- ''वर्ण–समूह का ज्ञान, पहेलियों का कोना, कविता व कहानियों का कोना छात्रों को भाषा ज्ञान देने में बहुत ही आवश्यक है। तथा इनसे बालक का पूर्ण विकास होता है। मैंने अपनी कक्षा में इन्हें लागू किया था तथा इसका सकारात्मक प्रभाव भी मैंने पाया। सभी छात्रायें इसमें भाग लेती हैं तथा उनकी स्कूल में उपस्थिति में भी सुधार होता है।'' – (सुमन, कापसहेड़ा नं.–3/2, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''हम इनको अपनी कक्षा में लागू करना चाहेंगे क्योंकि इनके माध्यम से निश्चित ही बेहतर परिणाम निकलेंगे।'' – (प्रभा, आदर्श विद्यालय, ई–ब्लॉक, करोल बाग क्षेत्र)
- ''शत प्रतिशत इसे अपनी कक्षा में प्रयोग करेंगे, इनसे स्वर और व्यंजन की स्पष्ट जानकारी सरल रूप से बच्चों को समझ आयेगी।'' – (माया यादव, हरकेश नगर, मध्य क्षेत्र)
- ''निश्चित रूप से इन क्रियाओं को अपनी कक्षा में लागू करूंगी। इनसे हमारे छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ेगा व बच्चे विभिन्न विषयों में रूचि लेंगे।'' – (बीना राही, लालकिला, शहरी क्षेत्र)
- ''हाँ, इन्हें हम अपनी कक्षा में लागू करना चाहेंगे, क्योंकि इससे हम बच्चों का शब्द ज्ञान काफी बढ़ा सकते हैं तथा बच्चे अपनी विचार सबके सम्मुख रख सकते हैं।'' – (मनीष, सहयोग विहार–2, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''बिल्कुल लागू करना चाहेंगे ताकि अधिगम स्तर में सुधार हो सके और हमारे शिक्षण कौशल में भी सुधार हो।'' – (रचना, ईस्ट पटेल नगर, करोल बाग क्षेत्र)
- ''आपके द्वारा बताये गये तरीकों को कक्षा में अवश्य लागू करना चाहूंगी क्योंकि इन तरीकों से शिक्षण प्रभावशाली, स्थाई व आनन्दपूर्वक होगी।'' – (आभारानी, दरीबा न्यू, शहरी क्षेत्र)
- ''हाँ, मैं इनको लागू करना चाहूंगी क्योंकि यह बहुत सरल व सुलझे हुए तरीके हैं और बच्चों को उन्हें समझाने में और खेलकूद द्वारा कराने में व पढ़ाने में अच्छा लगेगा।'' – (ममता सिंह, तिहार नं. –1, पश्चिम क्षेत्र)
- ''बिल्कुल, इन सबको अपनी कक्षा में लागू करना चाहूंगी। सभी तरीके फायदेमंद लगे, व छात्र और शिक्षक के बीच एक अच्छा संबन्ध व रिश्ता जोड़ने में सहायक है।'' – (रेनू हरनोटिया, महावीर एनक्लेव, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''हम अपनी कक्षा में इस सत्र में प्रयोग किये गये तरीकों को अवश्य लागू करेंगे, जिससे हमारा शिक्षण कार्य प्रभावी बन सके और अधिक से अधिक बच्चे प्राथमिक स्तर पर ही भाषा पढ़ना–लिखना सीख सकें।'' – (सुषमा, बस्ती हरफूल सिंह, शहरी क्षेत्र)
- ''सभी तरीके रूचिपूर्ण हैं एवं बच्चों को सिखाने व उनकी प्रतिभा बढ़ाने व मोहौल और मौका देने के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।'' – (अनीता यादव, तेखण्ड, ओखला, मध्य क्षेत्र)
- ''हिन्दी भाषा पढ़ाने का प्रभावशाली, रोचक व मनोरंजक तरीक हैं। जिनसे बच्चों की सृजनात्मकता का विकास होगा।'' – (सोनिका शर्मा, कालकाजी, मध्य क्षेत्र)
- ''इनको लागू करने से छात्र शब्दों व अक्षरों की पहचान आसानी से कर सकेंगे। अपनी समझ को अपने स्कूल और घर से जोड़ सकेंगे। अपनी भावनाओं को अपने लेखन के माध्यम से व्यक्त कर सकेंगे।'' – (शैलजा, पदम नगर, करोल बाग क्षेत्र)

प्रश्न संख्या 4 : इसके लिए आपको किस तरह के सहयोग की आवष्यकता है ?

इस प्रश्न के उत्तर में शिक्षकों ने दो मूल बिन्दु पर अपने मत दिये हैं :

1. प्रशासन से सहयोग
2. प्रारंभिक साक्षरता परियोजना की टीम से सहयोग।

परन्तु यह देखा गया है कि कई शिक्षकों ने इन दो बिन्दु पर अपने विचार पहले तीन प्रश्नों के उत्तर में भी रखे हैं, अतः कई शिक्षकों ने अपने उत्तर में एक से अधिक पहलू/बिन्दु को छुआ है। इसलिए इन दोनों बिन्दुओं के उत्तर को अलग से संकलन करके इनके प्रतिशत से अलग से निकाले गये हैं।

4(1) : प्रषासन से सहयोग – कुल संख्या 408 – 77.13%

सहयोग का स्तर	कुल संख्या	प्रतिशत	षिक्षकों की टिप्पणी
4(1)क शिक्षा विभाग एवं उच्चे अधिकारियों से सहयोग	244	46.13%	शिक्षा विभाग एवं प्रशासनिक अधिकारियों से सहयोग के संबन्ध में : • इनको लागू करने के लिए शिक्षा विभाग व अधिकारियों का सहयोग व स्वीकृति जरूरी। • क्षेत्रीय शिक्षा अधिकारी (ए.ई.ओ.) व उप निरीक्षक (एस.आई.) के निरीक्षण का नजरीया बदलने की जरूरत। • पाठ्यक्रम में लचीलापन व इन विधियों को शामिल करने की जरूरत। • परीक्षा एवं मूल्यांकन विधि पर पुनः विचार हो। • शिक्षकों को शिक्षण विधि चयन करने की छूट हो। • शिक्षकों को अपनी समय सारणी बनाने की छूट हो। • शिक्षण प्रक्रिया को अपनी गति से चलने दिया जाए। • शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जाए। • सहायक शिक्षण सामग्री समय पर उपलब्ध हो। • शिक्षकों पर शिक्षा से अतिरिक्त कार्यभार कम हो।

प्रश्न 4 (क) : प्रषासन से सहयोग पर षिक्षकों के कथन; उन्हीं के शब्दों में कुछ उदाहरण :

- ''इन तरीकों को लागू करने के लिए उच्च अधिकारियों का सहयोग बहुत जरूरी है। इसमें एस.आई व प्रधानाध्यापक शामिल हैं।'' – (शिखा अरोड़ा, खैबरपास, सीविल लाईन क्षेत्र)
- ''इन तरीकों को कक्षा में लागू करने के लिए स्र्वप्रथम विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं अधिकारीगण से अनुमति लेनी होगी, तभी इन तरीकों को प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है।'' – (रश्मि, जे.जे. कॉलोनी, शादीपुर, करोल बाग क्षेत्र)
- ''हमें अपने विभागीय एस.आई. व ए.ई.ओ. का सहयोग चाहिए, ताकि उनका निरीक्षण का तरीका सुधरे तथा वह अध्यापक पर नोट बुक, पाठ्यक्रम पूरा करने का दबाव न डाले।'' (सीमा, नजफगढ़–1/1, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''एस.आई. व मुख्य अध्यापक का सहयोग चाहिए कि वह शिक्षण प्रक्रिया को अपनी गति से चलने दें।'' – (रितु मलिक, बाग कड़े खाँ, पश्चिम क्षेत्र)
- ''इसके लिए विभाग द्वारा दिये गये पाठ्यक्रम पूरा करने का दबाव न होकर भाषा व व्याकरण का सही ज्ञान देने की जरूरत है। अगर बच्चा भाषा सही सीखेगा तो वह सामाजिक ज्ञान, विज्ञान व गणित के सवाल भी पढ़कर हल कर सकेगा।'' – (स्नेह गुप्ता, लाजपत नगर, मध्य क्षेत्र)

- ''शिक्षक मार्गदर्शिका प्रकाशित की जाए व स्कूलों में वितरित की जाए। अध्यापकों को छूट मिले कि वो सिलेबस से हटकर कुछ कर सकें। कक्षा डायरी में इनका वर्णन किया जाए। सुधार की रिर्पोट मांगी जाए।'' – (हरेन्द्र, नया रोशनपुरा, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''बच्चों के पाठ्यक्रम में इन तकनीकों को अवश्य लागू करना चाहिए जिससे बच्चे लाभ ले सकें और उनकी रचनात्मकता का विकास हो।'' – (प्रियदर्शनी, नजफगढ़–1, नजफगढ़ क्षेत्र)
- इन्हें लागू करने के लिए अध्यापकों को केवल अध्ययन के लिये इस्तेमाल किया जाए। पूर्ण सामग्री उपलब्ध कराई जाए, वह भी समय पर। कक्षा संख्या को नियन्त्रण में रखकर कार्य किया जाए।
- कोई पूर्व निर्धारित समय–सारणी न हो, अध्यापक स्वयं समय–सारणी बनाकर उसी आधार पर कार्य करें। समय–सारणी से बाद्य न किया जाए।'' – (विनय तवंर, कृषि कुंज)
- ''मुझे लगता है कि भाषा सिखाने के इन तरीकों को मैं स्वयं लागू कर सकता हूँ। सिर्फ़ मुझे स्कूल में शिक्षण कार्य करने दिया जाए, कार्यालय एवं 'क्लर्क' का कार्य नहीं।'' – (मोहमम्द नईम अब्बास, पहाड़ी धीरज, शहरी क्षेत्र)
- ''नीति बनाने वालों को इन तरीकों पर ध्यान देना चाहिए।'' – (मनीषा यादव, इन्द्रा पार्क, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''परीक्षा में बदलाव लाकर बच्चों पर जबरदस्ती डालने वाले दवाब को रोकना होगा व पढ़ते वक्त ही उनका मूल्यांकन करना होगा।'' – (राजेश कुमार यादव, टेगौर गार्डन, पश्चिम क्षेत्र)

4(1)ख स्कूल के स्तर पर सहयोग	214	40.5%	• स्कूल के प्राचार्य का सहयोग अति आवश्यक है। • अन्य शिक्षकों का सहयोग। • अभिभावकों का सहयोग। • शिक्षकों पर शिक्षण के अतिरिक्त कार्यभार कम हो। • सहायक शिक्षण सामग्री उपलब्ध हो, व इसके लिए पर्याप्त राशि एवं रख–रखाव की व्यवस्था की जाए। • कक्षा में छात्र की संख्या व्यावहारिक हो। • भवन व कक्षा कक्षा की व्यवस्था हो। • बच्चों की अभिव्यक्ति के प्रदर्शन के लिए 'डिस्पले बोर्ड' हो। • शिक्षक डायरी में इन विधियों को उल्लेख हो। • दो पाली वाले स्कूलों में चार्ट आदि लगाने की समस्या का हल निकाला जाए। • स्कूल में मूल सुविधाऐं उपलब्ध हो। • एक शिक्षक पर दो या दो अधिक कक्षा का अतिरिक्त कार्यभार न हो।

प्रश्न 4 (ख) : स्कूल के स्तर पर सहयोग; शिक्षकों के शब्दों में कुछ उदाहरण :

- ''स्कूल स्तर पर इसको लागू करने के लिए सबसे पहले प्रधानाचार्य का सहयोग जरूरी है। उसके बाद अपने सह अध्यापकों का समर्थन एवं सहयोग की आवश्यकता होगी।'' – (अंजुमन गुलाटी, स्टेट बैंक कॉलोनी, सीविल लाईन क्षेत्र)
- ''इसको लागू करने में प्रशासन का सहयोग चाहिए कि वे बच्चों की गलतियाँ एवं व्याकरण की त्रुटि पर अधिक ध्यान न देकर रचनात्मकता पर जोर दें, उसी के अनुसार अंक प्रणाली हो।'' – (तारा मित्तल, महावीर एनक्लेव–1, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''कई बार विभन्न गतिविधियों को करने में शोर हो जाता है व बच्चे उत्साहित हो जाते हैं और शोर करने लगते हैं, जिससे प्रधानाचार्य या कोई अन्य अधिकारी इस तरह शोर न करने को कहते हैं। अतः शिक्षकों को इन गतिविधियों को करने की छूट होनी चाहिए।'' – (अर्चना, डाबड़ी, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''हमें अभिभावकों का सहयोग भी चाहिए। क्यों एक दिन भी बच्चे की कापी न चैक की जाए तो अगले दिन अभिभावक पूछते हैं कि मैडम आपने कॉपी क्यों चैक नहीं की।'' – (विजय लक्ष्मी, नसीरपुर, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''इस तरीके को अपनाने के लिए सही स्थान होना चाहिए, क्योंकि जो भी पढ़ाने के लिये सामग्री तैयार करते हैं, उन्हें सही तरीके से रखने में बहुत दिक्कत आती है या तो वो खो जाती है या फट जाती है। क्योंकि हर रोज़ उन्हें उठाकर रखना बड़ा मुश्किल है और फिर ऑडिट होता है और फट जाने पर या खो जाने पर आपत्ति उठाते हैं।'' – (पुष्पा देवी, नया रोशनपुरा–1, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''इसको लागू करने करने के लिए एक कमरा एक अध्यापक को मिले। दूसरी शिफ्ट वाले स्कूलों में यह नहीं हो सकता।'' – (ममता यादव, गोविन्दपुरी, मध्य क्षेत्र)
- ''हमारी कक्षा टेन्ट में चलती है, टेन्ट में यह कार्य करना बहुत मुश्किल है।'' – (रेनू, चाँद नगर बी, पश्चिम क्षेत्र)
- ''हमारा स्कूल का भवन टूट रहा है इसलिए चार्ट आदि लगाने में बहुत दिक्कत आती है।'' – (रेनू पहूजा, ख्याला न्यू, पश्चिम क्षेत्र)
- ''इसके लिए मुझे स्कूल प्रशासन से इतना ही सहयोग चाहिए कि वह मुझ ऐसे करने दे और इसे एक 'वेस्ट एक्सरसाईज' के रूप में न देखे।'' – (रितु, पुराना रोशनपुरा, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''अल्पहार बांटना व अन्य रिर्पोट तैयार करने व अन्य कार्यभार शिक्षकों पर न डाला जाए।'' – (कविता, मादीपुर गांव, पश्चिम क्षेत्र)
- ''कुछ एम.सी.डी. स्कूलों में एक ही अध्यापक दो या तीन कक्षा ले रहे हैं, उन्हें अतिरिक्त चार्ज से मुक्त करना चाहिए।'' – (अशोक कुमार, गोविन्दपुरी, मध्य क्षेत्र)
- ''हम इन्हें अपनी कक्षा में लागू करना चाहते हैं परन्तु 100 से ऊपर बच्चों को लेकर कठिनाई आती है।'' – (सोनिया, तेहखण्ड–।, मध्य क्षेत्र)
- ''स्कूल में सभी शिक्षकों में परस्पर सहयोग व कार्य करने की ईच्छा का सम्मान होना चाहिए।'' – (अमित आनन्द आर्य, रघुवीर नगर, पश्चिम क्षेत्र)
- ''इन विधियों को लागू करने के लिए प्रत्येक विद्यालय में एक ऐसा 'श्यामपट्ट', डिस्पले बोर्ड या कमरे की व्यवस्था करना चाहिए जहाँ पर बच्चों द्वारा लिखी कहानियाँ, पहेलियाँ या कविताऐं लगा सकें।'' – (सुरेन्द्र प्रताप सिंह, चाँद नगर, डी–2, पश्चिम क्षेत्र

4(2) : प्रारंभिक साक्षरता परियोजना टीम से सहयोग :			
सहयोग किनसे	**कुल संख्या**	**प्रतिशत**	**षिक्षकों की टिप्पणी**
क. प्रारंभिक साक्षरता परियोजना की टीम से सहयोग की मांग	337	66%	शिक्षकों को भविष्य में भी प्रा.सा.परि. की टीम से निम्न सहयोग चाहिए : • प्रा. सा. परि. द्वारा निर्मित सहायक शिक्षण सामग्री – ▪ अक्षर चार्ट ▪ वर्ण समूह चार्ट ▪ कविताऐं ▪ कहानियों का संग्रह ▪ अन्य शिक्षण सामग्री शिक्षकों को उपलब्ध कराना – • समय–समय पर शिक्षकों का प्रशिक्षण, कार्यशाला, गोष्ठी आयोजित कराना। • स्कूलों में जाकर इस विधि का कक्षा में प्रत्यक्ष प्रदर्शन करना। • सी.डी. या विडियो द्वारा इनकी जानकारी देना। • शिक्षकों के लिए इस विधि की निर्देश पुस्तिका उपलब्ध कराना। • शिक्षकों से निरन्तर संवाद, मासिक बैठक एवं पाठ योजना बनाने के लिए मार्गदर्शन। • शिक्षकों को निरन्तर मार्गदर्शन। • इस विधि से संबन्धित शोध की जानकारी शिक्षकों तक पहुंचाना। • नये–नये प्रयोग की जानकारी देना।

शिक्षकों द्वारा प्रारंभिक साक्षरता परियोजना की टीम से सहयोग के कुछ पहलू उन्हें के शब्दों में, कुछ उदाहरण :

- ''इसके लिए हमें अक्षर चार्ट, वर्ण चार्ट, कविता चार्ट और कहानियाँ जो सत्र में इस्तेमाल की गई या इसी तरह की अन्य शिक्षण सामग्री की आवश्यकता पड़ेगी। कुछ सामग्री वैसे हम अपने स्तर पर विकसित करने का प्रयास करेंगे।'' – (शमशेर सिंह, खज़ान बस्ती, पश्चिम क्षेत्र)
- ''इसको लागू करने के लिए सरकार द्वारा ऐसी शिक्षण सामग्री शिक्षकों को स्कूलों में उपलब्ध करवानी चाहिए। हमें मुख्य अध्यापक के सहयोग की भी जरूरत होगी।'' – देवयानी शर्मा, मॉडल टाउन–।।, सीविल लाईन क्षेत्र)
- ''विद्यालयों में इस तरह की गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए, इसके लिए सहायक शिक्षण सामग्री आदि के लिए विशेष व्यवस्था हो। तथा अधिकतर पुस्तकों में अभ्यास के लिए इस तरह के अधिक से अधिक क्रियाकलाप हों।'' – (सन्तोष कौशिक, जे.जे. स्लम कालकाजी, मध्य क्षेत्र)
- ''हमें इस तरह की सामग्री व इस तरीके को लागू करने के लिए आपका मार्गदर्शन चाहिए। बहुत अच्छा होगा अगर आप हमारे स्कूल में आकर इन तरीकों का प्रदर्शन करें। इससे हमें बहुत लाभ मिलेगा।'' – (निशा जिन्दल, जहांगीरपुरी, सीविल लाईन क्षेत्र)
- ''समय–समय पर इसी तरह के गोष्ठी शिक्षकों के लिए करने की व्यवस्था की जाए और नई–नई जानकारी बांटी जाऐं।'' – (महेन्द्र सिंह, बलजीत नगर, करोल बाग क्षेत्र)

- ''आपके द्वारा बताये गये सुझाव व विधियों की एक निर्दश पुस्तिका बनाकर शिक्षकों को दी जाए, साथ में कक्षा की दीवारों पर केवल शिक्षकों द्वारा बनाये गये चार्ट न हो बल्कि बच्चों द्वारा किये गये कार्य को लगाने की स्वतंत्रता दी जाए।'' – (सारिका चुग, लाजपत नगर, मध्य क्षेत्र)
- ''उपरोक्त क्रिया विधियों को लागू के लिए अध्यापकों को रेफरेन्स बुक प्रदान करनी चाहिए।'' – (मनीष कुमार, बाबरपुर, शाहदरा, उत्तरी क्षेत्र)
- ''इन तरीकों की एक निर्दश पुस्तिका बनाकर शिक्षकों को दी जाए और रिकार्ड करके कंप्यूटर फ्लापी या सी.डी. के माध्यम से सिखाने में प्रयोग किया जाए।'' – (प्रदीप चिक्कारा, शादीपुर–।, करोल बाग क्षेत्र)
- एक ऐसी ही गोष्ठी हमारे प्रधानाचार्य के समक्ष भी हो जिससे उनकी सहायता से हम अपने स्कूलों में इस विधि का प्रयोग कर सकें।'' – (शिखा अग्रवाल, चन्द्रावल, सीविल लाईन)
- ''पठन सामग्री का किसी पाठ या उप विषय के लिय किस तरह उपयोग किया जाए इसका मार्गदर्शन चाहिए।'' – (बन्दना मेहरा, दीनापुर, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''हम चाहते हैं कि इसकी जानकरी अन्य शिक्षकों को भी सेमिनार आयोजित करके दी जाए। एक और चीज़ कि हमारे स्कूल के बांकी शिक्षकों को भी इसकी जानकारी दी जाए। इससे हमें इनको अपने स्कूल में लागू करने में मदद मिलेगी।'' – (पुनीत यादव, जहांगीरपुरी, सीविल लाईन)
- ''पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में इनसे संबन्धित क्रियाकलाप होना चाहिये व इन्हें जोड़ना चाहिए। इस प्रकार के और भी सत्र आयोजित किये जाने चाहिये।'' – (नेहा सैनी, देव नगर, करोल बाग)
- ''सभी विद्यालयों में यह शिक्षण सामग्री व चार्ट शिक्षकों को मिले। एक निर्देश पुस्तक के माध्यम से इनकी पूरी जानकारी दी जाए।'' – सत्येन्द्र पाण्डेय, कापसहेड़ा, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''हमारे पाठ्यक्रम को भी वर्णसमूह के हिसाब से बनाया जाए तथा इनको पाठ्यक्रम में जोड़ा जाए।'' – (मूलचन्द्र शर्मा, ज्वालापुरी–।, नजफगढ़ क्षेत्र)
- ''अध्यापक को इन्हें लागू करने के लिए चार्ट व पाठ योजना बनाने की आवश्यकता होगी। इनको लागू करना आसान है व निश्चित रूप से परिणाम मिलेंगे। आपके सहयोग की आवश्यकता है।'' – (मीनू चौहान, कमला नगर, सीविल लाईन क्षेत्र)
- ''अध्यापकों को बाल साहित्य से जुड़ी किताबें उपलब्ध कराई जाए ताकि कविताओं व कहानियों के माध्यम से कक्षा रोचक बनाई जा सके।'' – (कविता उदार, भरथल, नजफगढ़ क्षेत्र)

निष्कर्ष

दिनांक 8 मई 2007 से 21 मई 2007 के भीतर, नगर निगम दिल्ली के 7 क्षेत्रों में कार्यरत लगभग 600 शिक्षकों को 16 प्रशिक्षण सत्रों के तहत प्रारंभिक साक्षरता परियोजना द्वारा विकसित शिक्षण विधियों से अवगत कराया गया। इनमें से 14 सत्रों में उपस्थित 529 शिक्षक ने एक प्रश्न प्रपत्र भरकर इन सत्रों पर अपनी प्रतिक्रिया व सुझाव दिये। शिक्षकों द्वारा दिये गये सुझाव व प्रतिक्रिया का सार इस प्रतिवेदन में प्रस्तुत किया गया है। इसके मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं :

1. **इन विधियों को लागू करने संबन्धित प्रतिक्रियाऐं :**
   94% शिक्षक इन विधियों को अपने स्कूल में लागू करना चाहते हैं जिसमें से 49% इन्हें ''निश्चित रूप से लागू करना चाहते हैं और 45% ने इन्हें लागू करने की ईच्छा प्रकट की है।

2. **सत्र में प्रस्तुत की गई पढ़ने–लिखने की विधियों पर षिक्षकों की प्रतिक्रिया :**
   529 में से लगभग सभी शिक्षकों को प्रारंभिक साक्षरता परियोजना द्वारा विकसित विधियाँ फायदेमंद लगी। इनमें से 41% शिक्षकों ने प्रारंभिक स्तर यॉनि कक्षा 1 की विधि दोनों पसन्द की। इसके अलावा 166 यानि 31% शिक्षकों का विशेष जुड़ाव प्रारंभिक स्तर की साक्षरता विधियाँ, जैसे वर्ण समूह, अक्षर चार्ट, कविता व चित्र द्वारा शब्द से रिश्ता बनाना, इत्यादि को अति लाभदायक व उपयोगी माना 126% शिक्षकों ने केवल कक्षा के भीतर लिखित मोहौल बनाने के तौर तरीके अपनाने चाहे, जैसेकि शब्द–दीवार, कविता व पहेली का कोना, कहानी पर प्रतिक्रिया चार्ट इत्यादि।

3. इन विधियों को लागू करने के लिये षिक्षकों के कुछ ठोस सुझाव :

- कई शिक्षकों ने चाहा है कि इन विधियों को शीघ्र ही लागू किया जाए।
- शिक्षकों ने इन विधियों को लागू करने की अनुमति निगम के शिक्षिका प्रशासन अधिकारियों से चाही है।
- इन विधियों से संबन्धित सम्पूर्ण सहायक सामग्री व शिक्षक निर्देश पुस्तिका व सी.डी. शिक्षकों को उपलब्ध करवाई जाए।
- इन्हें लागू करने के लिए प्रशिक्षण सत्र आयोजित किये जाने चाहिए।
- स्कूल के प्रचलित पाठ्यक्रम व तौर–तरीकों में इन्हें औपचारिक तौर से शामिल किया जाये या पाठ्यक्रम में लचीलापन हो ताकि कक्षा के भीतर इन्हें लागू करने की गुंजाईश हो और साथ ही में इनका मूल्यांकन भी व्यवस्थित ढंग से हो सके।

4. शिक्षकों को इन विधियों को लागू करने के लिये निम्न प्रकार के सहयोग चाहिए :

- शिक्षा विभाग एवं प्रशासनिक अधिकारियों से सहयोग।
- परीक्षा एवं मूल्यांकन विधि पर पुर्न विचार हो।
- स्कूल के प्राचार्य का सहयोग।
- सहायक सामग्री समय पर उपलब्ध हो।
- अभिभावकों का सहयोग।
- शिक्षकों पर शिक्षण के अलावा कार्यभार कम हो।
- दो पाली वाले स्कूलों में चार्ट आदि लगाने की समस्या का हल निकाला जाए।